आशीर्वाद में झलकते संतोष और प्रसन्नता

राम कुमार सेवक : यह कैसा विचित्र संयोग है कि आध्यात्मिकता और आशीर्वाद, दोनों ही शब्दों की शुरूआत वर्ण 'आ' से होती है। दूसरे शब्दों में कहें, तो दोनों की एक ही राशि है। इससे स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिकता में आशीर्वाद का अहम स्थान है।

अक्सर देखा जाता है कि घरों में, स्कूल में या कहीं और जब बच्चे बड़ों का अभिवादन करते है या उनके चरण स्पर्श करते हैं, बड़े उन्हें आशीर्वचन कहते हैं। प्राचीन काल से कहे जा रहे वाक्य 'आयुष्मान भव', 'चिंरजीवी भव' आदि आशीर्वादों के ही सूचक है। स्त्री के संदर्भ में 'सौभाग्यवती भव' आदि का प्रयोग आशीर्वचन के रूप में किया जाता है। आजकल इन संस्कृतनिष्ठ वाक्यों का प्रयोग थोड़ा कम हो गया है और इनके स्थान पर 'जीते रहो' और 'खुश रहो' आदि का चलन हो गया है, तो भी इनका भव वही है।

आशीर्वाद देना और आशीर्वाद लेना- दोनों ही संतोष और प्रसन्नता का विष्य हैं। अगर कोई व्यक्ति आपसे प्रसन्न है, तब ही तो उसके मुख से आपके लिए आशीर्वाद भरे बोल फूटेंगे। दूसरी ओर, आशीर्वाद ग्रहण करने वाला भी अपने मन में संतोष का अनुभव करेगा। यह एक सकारात्मक स्थिति है कि दोनों तरफ प्रसन्नता का भाव है, असंतोष नहीं।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आशीर्वाद मौन के रूप में भी व्यक्त हो सकता हैं। आपने अगर किसी के लिए कुछ अच्छा किया और उसनें ह्रदय की गहराई से उस अच्छाई को महसूस किया, लेकिन इसका धन्यवाद या आभार जताने के लिए उस वक्त सही शब्द नहीं सूझ सके, तो उसकी आंखें, उसके चेहरे का भव, उसके होडों की मुस्कराहट- से सब मिलकर आशीर्वाद का भाव ही हम तक पहुंचा रहे होते हैं। यहां शब्द तो नहीं हैं, पर हमें शब्दों की चाह किए बगैर बॉडी लैंग्वेज यानी हाव-भाव देखकर संतुष्ट हो जाना चाहिए। आशीर्वाद तो भवों की ही स्थिति है, वहां शब्दों का असल में कोई काम नहीं है। यह भी ध्यान रखें कि न तो हर कोई आशीर्वाद दे सकता है और न ही हर कोई आशीर्वाद ले सकता है। असल में, आशीर्वाद देने और आशीर्वाद लेने की क्षमता होना भी जरूरी है। क्षमता से तात्पर्य यह है कि आशीर्वाद रूपी हमारे अकाउंट में कुछ बैलेंस (शेष) होना भी तो चाहिए। कहने का अर्थ यह है कि अगर हमने अपने जीवन में किसी से आशीर्वाद लिया है, तब ही तो हम आशीर्वाद देने योग्य हो पाते हैं। अगर हमने कभी किसी से आशीर्वाद नहीं लिया तो किसी के लिए हमारे मुंह से कोरे शब्द ही निकलेंगे, सच्चा आशीर्वाद नहीं। इसी तरह, आशीर्वाद-दाता के प्रति यह भरोसा होना चाहिए कि इसका आशीर्वाद मेरा भग्योदय कर देगा। इसके आशीर्वाद से मेरा जीवन वास्तव में संवर जाएगा। जब दोनों ओर ऐसी स्थिति होती है, तो ही असल में आशीर्वाद फलित हाता है। जहां आशीर्वाद मौन में व्यक्त नहीं होता, यानि जहां कुछ शब्दों में आशीर्वाद दिया जाता है, वहां भी वे केवल शब्द नहीं होते। शब्दों के पीछे एक सकारात्मक भाव या सदिच्छा छिपी होती है। यह सकारात्मक भाव हमारा हौसला बढ़ाता है और सफलता के प्रति हमें आश्वस्त करता है। यह भी ध्यान रहे कि जब आशीर्वाद का योग सत्कर्म के साथ होता है, तो सफलता ज्यादा दूर नहीं रहती। व्यक्ति अपना ध्येय आसानी से हासिल कर लेता है।

कई बार लोग दूसरों से जबर्दस्ती आशीर्वाद लेने की बात कह देते है। यानी जिससे आशीर्वाद लिया जाना है, उस व्यक्ति के प्रति उसके मन में न तो विश्वास होता है और न ही वैसा भव। असल में वे आशीर्वाद नहीं चाहते, बल्कि किसी तरह से अपना स्वार्थ सिद्व करना चाहते है। अक्सर राजनेता चुनावों के वक्त गली-मोहल्लों में घूमकर, हाथ जोड़कर लोगों से मांग करते रहते हैं कि उन्हें जनता का आशीर्वाद चाहिए। असल में, उन्हे आशीर्वाद नहीं, वोट चाहिए होते हैं। बहरहाल, हमें ऐसे काम करने के लिए हमेश तत्पर रहना चाहिए, जिनसे हम किसी के आशीर्वाद के पात्र बन सकें। इसी तरह हम आशीर्वाद देने की क्षमता भी अर्जित कर सकते हैं और जीवन को सुखद व सार्थक बना सकते हैं।

rksewak@yahoo.co.in